# पुनः भारत को बनायें
# विश्वविजेता

कु॰ सी॰ सुदर्शन

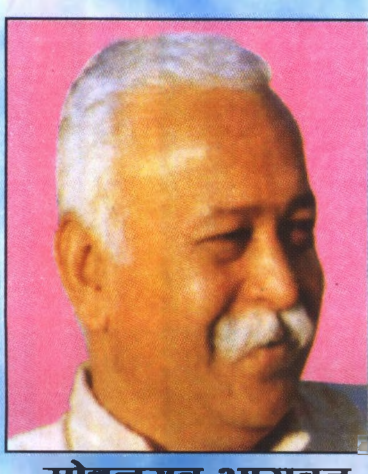

मोहनराव भागवत

## आपका निर्णय शिरोधार्य

05/04/05.

## पुन: भारत को बनायें

# विश्वविजेता

कुप्० सी० सुदर्शन

सुरुचि प्रकाशन
केशव कुंज, नयी दिल्ली–११००५५

## प्रकाशकीय निवेदन

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक माननीय रज्जू भैया जी द्वारा **सरसंघचालक** का दायित्व **माननीय कुप्पहल्ली सीतारामय्या सुदर्शन जी** को सौंपे जाने पर अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा के सदस्यों एवं नागपुर के समस्त स्वयंसेवकों के सामने प्रथम उद्बोधन में उन्होंने जो मार्गदर्शन किया, उसका यह सम्पूर्ण पाठ तथा मा० सरकार्यवाह श्री हो० वे० शेषाद्रि द्वारा स्वयं की आयु एवं स्वास्थ्य की स्थिति अच्छी न होने के कारण इस महत्ती पद पर किसी नवीन व्यक्ति को लाने का प्रस्ताव रखने के बाद अ.भा. प्रतिनिधि सभा द्वारा **श्री मोहनराव मधुकर भागवत** को माननीय **सरकार्यवाह** चुने जाने पर प्रतिनिधि सभा के समक्ष उनका प्रथम उद्बोधन समस्त स्वयंसेवकों के लाभार्थ प्रकाशित किया जा रहा है।

अन्य भी, भारतमाता के चरणों में श्रद्धानत् होकर राष्ट्रहित के लिए समर्पित जनों को यह सन्देश ध्येय का स्मरण और भी तीव्रता से करायेगा।


प्रकाशक : सुरुचि प्रकाशन
(सुरुचि संस्थान का प्रकाशन विभाग)
देशबन्धु गुप्त मार्ग,
नयी दिल्ली-११००५५.

प्रथम संस्करण : सं० २०५७ (ई० २०००)


© : सुरुचि प्रकाशन


मूल्य : ३/- रुपये

मुद्रक : पैकिंग प्रिन्टर्स, दिल्ली-११०००७.

||श्री ||

## पूर्व सरसंघचालक प. पू. रज्जू भैया,

*सरकार्यवाह मा. हो. वे. शेषाद्रिजी, मान्यवर क्षेत्र संघचालक, प्रान्त संघचालक, सह प्रान्त संघचालक महोदय,*

*अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा की बैठक के लिए देश के विभिन्न भागों से तथा विदेशों से भी पधारे कार्यकर्ता बन्धुगण*

*तथा संघ-गंगा के स्रोत इस नागपुर महानगर के समस्त स्वयंसेवक बन्धुओ, उपस्थित सज्जन-वृन्द, माताओ और बहिनो!*

**राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ** अपनी जीवन-यात्रा के ७५वें वर्ष में चल रहा है। आज से ठीक ७५ वर्ष पूर्व ११ मार्च १९२५ को प. पू. डाक्टर साहब के मन में क्या कुछ चल रहा होगा, इसकी कुछ कल्पना हम कर सकते हैं। उस समय १९२१ का आन्दोलन, जो इस घोषणा के साथ शुरू हुआ था कि एक वर्ष में हम स्वराज्य प्राप्त कर लेंगे, विफल हो चुका था। अंग्रेजों के विरुद्ध एकमुखी लड़ाई लड़ने के लिए महात्मा गांधी ने खिलाफत आन्दोलन का समर्थन किया था। बहुत से लोग नहीं जानते होंगे कि द्वितीय महायुद्ध के पश्चात् तुर्की के खलीफा को अंग्रेजों ने उनकी गद्दी से उतार कर मुस्तफा कमालपाशा को उस पर बैठा दिया। इस पर भारत के मुसलमान बहुत क्रुद्ध हो गये और अंग्रेजों के खिलाफ हो गये। तब तक मुसलमानों को अपना हस्तक बनाकर अंग्रेज अपना राजनीतिक खेल खेल रहे थे और इस देश की स्वराज्य की आकांक्षा को दबाने का प्रयत्न कर रहे थे। महात्मा गांधी जी ने देखा कि आज मुसलमान अंग्रेजों के विरोध में हो गया है और इसलिए हमने अगर खिलाफत आन्दोलन का समर्थन कर दिया तो मुसलमानों का सहयोग इस स्वतंत्रता आन्दोलन में मिल सकेगा और इसलिए उन्होंने कांग्रेस से खिलाफत आन्दोलन के समर्थन का प्रस्ताव पारित

करवा लिया। अनेक नेता ऐसे थे जो इससे सहमत नहीं थे। लोकमान्य बालगंगाधर तिलक तो इसे अखिल आफत कहते थे। पं. मदनमोहन मालवीय, लाला लाजपतराय, यहाँ तक कि मोहम्मद अली जिन्ना ने भी विरोध किया था कि तुर्की के खलीफा को अगर उतार दिया गया है तो भारत के मुसलमानों को क्या लेना-देना है? लेकिन उस समय महात्मा गांधी भारतीय राजनीतिक क्षितिज पर उदीयमान सूर्य के रूप में आये थे, इसलिए उनकी बात मानी गयी और खिलाफत आन्दोलन के समर्थन का प्रस्ताव पारित हुआ तथा देशभर में हिन्दु-मुस्लिम एकता के नारे चलने लगे।

**खिलाफत आन्दोलन के समर्थन का दुष्परिणाम :**

उस समय प.पू. डाक्टरजी ने महात्मा गांधी से बातचीत में पूछा — बापू! इस देश में हिन्दु, मुसलमान, ईसाई, पारसी, यहूदी अनेक लोग रहते हैं। आप सबकी एकता की बात क्यों नहीं करते? केवल हिन्दु-मुस्लिम एकता की बात क्यों करते हैं? तो महात्मा गांधी ने कहा कि "देखा नहीं, इसके कारण मैंने मुसलमानों का स्वतंत्रता के आन्दोलन में सहयोग प्राप्त कर लिया है!" डॉ. साहब ने कहा, "लेकिन आप केवल हिन्दु-मुस्लिम एकता की बात करेंगे तो इससे मुसलमानों का दिमाग और चढ़ेगा और खिलाफत का समर्थन करने के कारण उनकी देश-बाह्य निष्ठा जागेगी और इसलिए मुझे आशंका है कि वे हमारे निकट आने के स्थान पर हमसे दूर जायेंगे।" महात्मा गांधी ने कहा, "मुझे ऐसी कोई आशंका नहीं है।"

लेकिन जब खिलाफत आन्दोलन विफल हो गया तो स्वाभाविक रूप से देश का मुस्लिम समाज बड़ा नाराज हो गया। पर अंग्रेजों के खिलाफ कुछ कर नहीं सकता था, इसलिए उसने अपना सारा रोष हिन्दुओं पर उतारा। जैसे किसी कमजोर व्यक्ति को बाहर वाला कोई पीट दे और वह उसका प्रतिकार नहीं कर सके तो घर में आकर अपने बीवी-बच्चों को ठोकता है, जो उससे कमजोर हैं, उसी प्रकार उन्होंने अपना सारा रोष हिन्दुओं पर उतारा। देशभर में दंगे हुए, और उन दंगों में हिन्दु समाज की ही सबसे अधिक क्षति हुई। विशेषकर मालाबार में जो मोपला विद्रोह हुआ, उसमें १५०० हिन्दु मारे गये और बीस हजार लोगों का बलात् धर्मपरिवर्तन हुआ। किन्तु हमारा आन्दोलन विफल हो गया है, इसको स्वीकार करने के स्थान पर कांग्रेस ने प्रस्ताव में यह कहा कि केवल तीन परिवारों

का मतान्तरण हुआ है, बाकी सब बात झूठ है। अर्थात् मुसलमानों का येन-केन-प्रकारेण सहयोग बनाये रखने के लिए भी उन्होंने इस सत्य को स्वीकार करने का साहस नहीं दिखाया। बाद में और एक घटना हो गयी। स्वामी श्रद्धानन्द की रशीद नामक व्यक्ति ने हत्या कर दी। लेकिन उसको भी दोष देने के लिए कांग्रेस तैयार नहीं हुई। बल्कि गोहाटी में महात्मा गांधी ने कहा कि मैं रशीद को दोषी नहीं मानता हूँ। दोषी तो वे लोग है जिन्होंने इस प्रकार का वातावरण पैदा किया।

**समाज-संगठन का विचार :**

इस सारे घटनाक्रम को देखकर प.पू. डाक्टरजी के मन में कुछ विचार दृढ़ीभूत हुए। उन्होंने कहा कि यह देश हिन्दुओं का है। हिन्दुस्थान छोड़कर दुनिया में हिन्दुओं की अपनी कही जाने वाली भूमि नहीं है। वह इस घर का मालिक है। लेकिन उसकी असंगठित अवस्था और उसकी दुर्बलता के कारण वह अपने ही घर में पिट रहा है। उसी को लोग सारी गालियाँ दे रहे हैं। इसलिए जब तक हिन्दु संगठित नहीं होते, तब तक वे अपनी आत्मरक्षा करने में भी सक्षम नहीं होंगे। और इसलिए हिन्दु को संगठित होना चाहिए, बल संपन्न होना चाहिए, सामर्थ्य-संपन्न होना चाहिए। यही नहीं, उन्होंने कहा कि भारत यह हिन्दु राष्ट्र है। उस समय अंग्रेजों के प्रभाव के कारण अनेक पढ़े लिखे लोग हिन्दुस्थान को एक राष्ट्र नहीं मानते थे। वे कहते थे कि यह एक नया उभर रहा राष्ट्र है। एक राष्ट्र बनने की प्रक्रिया में है। `It is Nation in the Making' क्यों? क्योंकि हिन्दुस्थान तो पहले राष्ट्र था ही नहीं। भिन्न-भिन्न प्रकार के लोग हिन्दुस्थान में एक साथ रहते थे, अलग-अलग राज्य थे, आपस में लड़ते-झगड़ते रहते थे। अंग्रेजों के बाद ही इस देश में एक प्रशासन-तंत्र स्थापित हुआ और इसलिए एक राष्ट्र के रूप में ढालना हो तो इस अंग्रेजों के राज्य में रहने वालों को एक राष्ट्र के रूप में ढालना होगा और उनकी एक मिली-जुली संस्कृति का विकास करना होगा।

**...... जब तक हिन्दू संगठित नहीं होते, तब तक वे अपनी आत्मरक्षा करने में भी सक्षम नहीं होंगे। और इसलिए हिन्दु को संगठित होना चाहिए, बल संपन्न होना चाहिए, सामर्थ्य-संपन्न होना चाहिए। यही नहीं, उन्होंने कहा कि भारत यह हिन्दु राष्ट्र है।**

## भारत हिन्दु राष्ट्र है :

डॉ. हेडगेवार जी ने कहा कि राष्ट्र कोई राजनीतिक अवधारणा नहीं है। किसी एक विशिष्ट भूभाग में लोग केवल रहते हैं, इसलिए राष्ट्र नहीं बनता। उसके लिए तो उस भूभाग के अंदर सदियों से रहते हुए उसके साथ एक रागात्मक, भावात्मक संबंध स्थापित होना पड़ता है। यह भूमि मेरी माँ है, मैं इसका पुत्र हूँ और पुत्र होने के नाते हम सब एक हैं, हमारे पूर्वज एक हैं, हमारी संस्कृति एक है, तब जाकर राष्ट्र का निर्माण होता है। और यह तो सनातन पुरातन राष्ट्र है। वेदकाल में इसने घोषणा की है — **'माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः'**। तो यह हिन्दु राष्ट्र है।

हिन्दु दुर्बल हो गया है इसलिए कोई दूसरा कहे कि यह हमारा घर है तो इसको हम नहीं मान सकते। किसी घर में किरायेदार रहते हों और उस घर का मालिक किसी दुर्घटना में मर जाये और केवल एक बच्चा बचे तो भी वह घर उसी बच्चे का होगा। इसलिए उन्होंने कहा कि हिन्दुस्थान में एक भी हिन्दु जब तक रहेगा, तब तक यह हिन्दु राष्ट्र ही रहेगा। और एक बात उनके ध्यान में आयी कि भाई! भारत का मुस्लिम समाज विशेषरूप से इस खिलाफत आन्दोलन के कारण देश-बाह्य निष्ठा से जुड़ गया है। वैसे भी कुल मिलाकर इस्लाम में राष्ट्रीयता की अवधारणा नहीं है। एम. आर. ए. बेग नाम के, ईरान में भारत के राजदूत रहे हुए, एक अच्छे विद्वान थे। उन्होंने एक पुस्तक लिखी है - **'Muslim Dilemma in India'** उस पुस्तक में वे कहते हैं — 'चूंकि विचारधारा के आधार पर मुसलमान का कोई देश नहीं हो सकता और इस कमी को वह अत्यधिक

**एम. आर. ए. बेग नाम के, ईरान में भारत के राजदूत रहे हुए, एक अच्छे विद्वान थे। उन्होंने एक पुस्तक लिखी है - 'Muslim Dilemma in India' उस पुस्तक में वे कहते हैं — 'चूंकि विचारधारा के आधार पर मुसलमान का कोई देश नहीं हो सकता और इस कमी को वह अत्यधिक संगठन-भाव से पूरा करने का प्रयत्न करता है, इसलिए एक निष्ठावान् मुसलमान न तो राष्ट्रवादी हो सकता है, न अन्तरराष्ट्रीयतावादी और न ही मानवतावादी हो सकता है। वह केवल राष्ट्रातीत साम्प्रदायिक हो सकता है।' तो इस्लाम के मूल में राष्ट्रीयता की अवधारणा नहीं है।**

संगठन-भाव से पूरा करने का प्रयत्न करता है, इसलिए एक निष्ठावान् मुसलमान न तो राष्ट्रवादी हो सकता है, न अन्तरराष्ट्रीयतावादी और न ही मानवतावादी हो सकता है। वह केवल राष्ट्रातीत साम्प्रदायिक हो सकता है।' तो इस्लाम के मूल में राष्ट्रीयता की अवधारणा नहीं है। यह बात अलग है कि इस्लाम का विस्तार जब विभिन्न देशों में हुआ तो उन देशों की जो संस्कृति थी वह ज्यादा प्रभावी रही और इसलिए अलग-अलग देशों की संस्कृति के आधार पर इस्लाम के अंदर भी विभाजन हो गया। लेकिन भारतवर्ष के अंदर वह प्रक्रिया अंग्रेजी राज होने के कारण आगे बढ़ नहीं पायी, बल्कि अंग्रेजों ने इसके अन्दर अनेक प्रकार बाधाएँ डालीं।

**पहला पर्व :**

## संघ कार्य की पृष्ठभूमि

डाक्टर साहब १९२१ में जब जेल में थे तो उनके साथ एक मुस्लिम भी थे। लेकिन वह एक तुर्की टोपी पहनते थे। डॉक्टर साहब ने उनसे पूछा कि आप तुर्की टोपी क्यों पहनते हैं? हम सब तो कांग्रेस के आन्दोलन में भाग ले रहे हैं, आप गांधी टोपी क्यों नहीं पहनते? तो उन्होंने उत्तर दिया कि डा० साहब! यह हमारी राष्ट्रीयता का प्रतीक है। तो डा० साहब को लगा कि हिन्दुस्थान में रहकर भी जो अपने आपको अलग राष्ट्रीयता वाला मानते हैं, उनको इस देश का कैसे माना जा सकता है? और इसलिए उनको लगा कि जब तक सब 'हम इस राष्ट्र के हैं' — इस भाव से ओत-प्रोत नहीं होते, तब तक इस देश के साथ निष्ठा कैसे उत्पन्न होगी? यहाँ के पूर्वजों के प्रति निष्ठा कैसे उत्पन्न होगी? डा० साहब मुसलमानों को राष्ट्रद्रोही मानने के लिए भी तैयार नहीं थे। उन्होंने कहा कि जब वे इस राष्ट्र को ही नहीं मानते तो उन्हें राष्ट्रद्रोही भी कैसे कहेंगे? इस राष्ट्र को अपना न मानने वाले लोगों को हमें परकीय (पराये) मानना पड़ेगा। तो जो इस राष्ट्र में निष्ठा रखते हैं, ऐसे ही लोगों को संगठित किये बिना, उनको बल-संपन्न, सामर्थ्य-संपन्न बनाये बिना न तो हिन्दु समाज अपनी रक्षा कर सकता

डा० साहब मुसलमानों को राष्ट्रद्रोही मानने के लिए भी तैयार नहीं थे। उन्होंने कहा कि जब वे इस राष्ट्र को ही नहीं मानते तो उन्हें राष्ट्रद्रोही भी कैसे कहेंगे? इस राष्ट्र को अपना न मानने वाले लोगों को हमें परकीय (पराये) मानना पड़ेगा।

है और न इस देश की रक्षा हो सकती है। और इसलिए १६२५ में विजयादशमी के शुभ मुहूर्त पर उन्होंने इसी नागपुर में संघ की शाखा का शुभारम्भ किया। यह ठीक है कि पहली शाखा मैदान में नहीं लगी। उनके घर पर ही उस बैठक में सब लोग बैठे हुए थे और उन्होंने घोषणा की कि आज से संघ प्रारम्भ हो गया। लेकिन कुछ दिनों के पश्चात् ही सबको लगा कि नौजवानों को यदि आकर्षित करना है तो शारीरिक कार्यक्रम होने चाहिए और इसलिए मोहिते का जो टूटा-फूटा बाड़ा था, उसको साफ कर वहाँ पर संघ की पहली शाखा प्रारम्भ हुई। अनेक लोग हँसे — यह हिन्दु समाज, इतनी विविधता से भरा, इतने जाति-पाँति-पंथ के भेद जिसके अंदर हैं! चार हिन्दु एक साथ चल नहीं सकते। उसको ये संगठित करने की बात करते हैं! इनका दिमाग खराब हो गया है, पागल हो गये हैं। लेकिन डॉ० साहब हँसकर सारी बातें टाल देते थे और उन्होंने अपने जीवन का कण-कण, रक्त का बिन्दु-बिन्दु इस कार्य के अन्दर खपा दिया। और जैसा कि कहा गया है —

**थे अकेले आप, लेकिन बीज का था भाव पाया**
**बो दिया निज को, अमर-वट संघ भारत में उगाया**

उस समय उन्होंने जो बीज बोया था, आज कितना विशाल, व्यापक, लहलहाता वट-वृक्ष बन गया है जिसकी शाखाएं सारे विश्व में फैल गयी हैं। हमको स्पष्ट रूप से दिखाई देता है कि डॉ० साहब ने पंद्रह वर्ष की छोटी सी अवधि में ही संघ-कार्य को देश के सब प्रान्तों तक फैला दिया।

**अनेक लोग हँसे — यह हिन्दु समाज, इतनी विविधता से भरा, इतने जाति-पाँति-पंथ के भेद जिसके अंदर हैं! चार हिन्दु एक साथ चल नहीं सकते। उसको ये संगठित करने की बात करते हैं! इनका दिमाग खराब हो गया है, पागल हो गये हैं। लेकिन डा0 साहब हँसकर सारी बातें टाल देते थे और उन्होंने अपने जीवन का कण-कण, रक्त का बिन्दु-बिन्दु इस कार्य के अन्दर खपा दिया।**

### संघ और राजनीति :

हिन्दु समाज के संगठन के लिए संघ कार्य करते समय उन्होंने संघ को राजनीति से अलग रखा। राजनीति के स्वयं कुशल खिलाड़ी थे। राजनीति के सारे छक्के-पंजे भी वे समझते थे, लेकिन उन्होंने कहा कि राजनीति मानव-निर्माण

का स्थान नहीं हो सकता। समाज-जीवन की जो हीनतम प्रवृत्तियाँ हैं, उनका खेल राजनीति में होता है और जहाँ हीनतम प्रवृत्तियों का बोलबाला हो, वहाँ मनुष्य के अन्दर सद्‌गुणों का निर्माण कैसे होगा? चरित्र का निर्माण कैसे होगा? और इसलिए स्वयं अपने-आपको उन्होंने राजनीति से अलग किया और संघ-कार्य में अपना सम्पूर्ण ध्यान व शक्ति लगायी।

यह ठीक है कि १६३० में जो जंगल सत्याग्रह हुआ, उसमें उन्होंने भाग लिया, लेकिन अपना सरसंघचालक पद उस समय के लिए डॉ० परांजपे के कंधों पर सौंपकर वे जेल में गये। उसमें भी उद्देश्य यह था कि जेल में सब लोग एक साथ रहेंगे तो सबके साथ वार्तालाप करने का अवसर मिलेगा और संघकार्य की दृष्टि से उन सबका सहयोग प्राप्त करने का प्रयत्न करेंगे। वह सत्य भी हुआ। जब जेल से बाहर आये तो सारे विदर्भ प्रान्त में संघ की शाखाएँ फैल गयीं। उनके इस अथक परिश्रम के कारण सन् १६४० में इसी भूमि के ऊपर जो संघ शिक्षा वर्ग हुआ उसमें हिन्दुस्थान के सब प्रान्तों से लोग यहाँ पर आये हुए थे। ४० दिन का संघ शिक्षा वर्ग था और बीमार होते हुए भी आग्रहपूर्वक उसके दीक्षान्त समारोप के कार्यक्रम में वे आये। उन्होंने अपने अंतिम भाषण में कहा कि हिन्दु राष्ट्र का एक छोटा-सा स्वरूप मैं अपनी आँखों के सामने देख रहा हूँ। अपने जीवन-काल में उन्होंने बता दिया कि हिन्दु संगठित हो सकता है।

१६३६ में द्वितीय महायुद्ध शुरू हो चुका था। उस समय डॉ० साहब बड़े अस्वस्थ हो गये थे। उनको लग रहा था — इतना अच्छा मौका आ रहा है कि इस द्वितीय महायुद्ध में जब अंग्रेज वहाँ पर युद्धरत रहेगा, उस समय हिन्दुस्थान के अंदर अगर हम शक्ति खड़ी कर सके तो हम स्वतंत्रता प्राप्त कर सकते हैं और इसलिए उन्होंने आह्वान किया कि नगरों में तीन प्रतिशत और ग्रामों में एक प्रतिशत संघ के पूर्ण गणवेशधारी स्वयंसेवक होने चाहिए। जब वर्धा में एक शिविर के अन्दर उन्होंने यह बात कही

४० दिन का संघ शिक्षा वर्ग था और बीमार होते हुए भी आग्रहपूर्वक उसके दीक्षान्त समारोप के कार्यक्रम में वे आये। उन्होंने अपने अंतिम भाषण में कहा कि हिन्दु राष्ट्र का एक छोटा-सा स्वरूप मैं अपनी आँखों के सामने देख रहा हूँ। अपने जीवन-काल में उन्होंने बता दिया कि हिन्दु संगठित हो सकता है।

और रात्रि को जिस समय वे निरीक्षण करने के लिए निकले तो स्वयंसेवक दिनभर के परिश्रम से काफी क्लांत होकर सो रहे थे। तब डा० साहब ने अप्पा जी के सामने अपने मन की व्यथा व्यक्त करते हुए कहा, "अप्पा जी! मैंने जो आज आह्वान किया उसका लोग अर्थ समझ नहीं पाये। अन्यथा उनको इतनी नींद कैसे आती?" तब कहते हैं अप्पाजी ने कहा कि आप चिन्ता मत कीजिए, अपने जिले में तो मैं यह करके दिखाऊंगा।"

जो हो, लेकिन डॉ० साहब उसके बाद रहे नहीं और नये सरसंघचालक प.पू. श्रीगुरुजी ने नये-नये कार्यकर्ता निकाले, प्रचारक निकाले और इस कार्य को आगे बढ़ाने का प्रयत्न किया। एक बार प.पू. गुरुजी से चर्चा के समय उन्होंने यह बताया कि अरे भाई! अगर उस समय डॉ० साहब की बात मानकर तीन साल के अन्दर हम लक्ष्य प्राप्त कर सके होते तो इस देश की स्वतंत्रता का आन्दोलन बिल्कुल भिन्न दिशा में जाता, क्योंकि १९४२ में अंग्रेज यूरोप में फँसा हुआ था, उसकी लगातार हार हो रही थी। यहाँ पर सबके सब नेता बंदी बना दिये गये थे। अगर हमारे पास उस समय शक्ति होती तो सारा शक्ति संतुलन हमारे हाथ में होता। लेकिन नहीं हो पाया। और इसीलिए इतना बड़ा आन्दोलन होने के बाद भी हम कुछ कर नहीं पाये।

**संघ और स्वतंत्रता आन्दोलन :**

जिस समय १९४२ का आन्दोलन हुआ, उस समय प.पू. श्रीगुरुजी ने अपनी पुरानी नीति को जारी रखा कि संघ इस आन्दोलन में भाग नहीं लेगा। अपने अनेक स्वयंसेवकों और प्रचारकों में बड़ी उद्विग्नता पैदा हुई, उद्वेलन पैदा हुआ कि यह क्या बात है? इतना बड़ा देश का आन्दोलन हो रहा है, 'अंग्रेजो, भारत छोड़ो' का नारा लगाकर सब लोग इस समय एकजुट हो गये हैं। हम लोगों को भी क्यों नहीं जुटना चाहिए? और उस समय अपने अनेक प्रचारकों ने श्री दत्तोपंत ठेंगड़ी जी को अपना प्रतिनिधि बनाकर श्रीगुरुजी के पास भेजा। दत्तोपंतजी केरल में थे और श्रीगुरुजी मंगलूर में। इसलिए दत्तोपंत जी वहाँ मिलने के लिए गये और उन्होंने बताया कि कार्यकर्ताओं के मन में इस प्रकार के सारे भाव चल रहे हैं। श्रीगुरुजी ने कहा कि 'देखो भाई! अगर स्वतंत्रता प्राप्त होने वाली हो, ध्येयपूर्ति होने वाली हो, तो हमको संपूर्ण शक्ति लगाने में कोई हर्ज नहीं है। लेकिन सबसे बड़ी बात यह है कि कांग्रेस ने इस प्रकार का आन्दोलन शुरू

करने से पहले देश के अंदर संघ और जो अन्य सारे संगठन थे उनका सहयोग नहीं लिया। खैर, उन्होंने सहयोग नहीं लिया तो इसलिए राष्ट्र के स्वतंत्रता आन्दोलन में हमको भाग नहीं लेना चाहिए, ऐसी बात नहीं है क्योंकि स्वतंत्रता केवल कांग्रेस को थोड़े ही मिलेगी, हम सबको मिलने वाली है। लेकिन कांग्रेस को इसकी जो तैयारी करनी चाहिए थी और उसके लिए दूर की सोच करके एक योजना बनानी चाहिए थी वह उन्होंने नहीं बनायी। यह बात ठीक है कि जैसी हम योजना बनाते हैं, घटनाक्रम भी उसी प्रकार से चलेगा ऐसा नहीं है, बीच में बदलना भी पड़ता है। उस समय पहल नेताओं के हाथों में रहनी चाहिए। लेकिन नेता तो सब गिरफ्तार हो चुके थे। इसलिए नेताओं के हाथ पहल नहीं रही। इतना अनियोजित आन्दोलन, वास्तव में हानिकारक हुआ। और इसलिए दिखाई दे रहा था कि इसको सफलता नहीं मिलेगी।

इतना होने के बाद भी अगर अपने को ऐसा लगता कि सफलता मिलेगी तो भी हम इसमें कूद सकते थे। किन्तु हमारी शक्ति के बारे में लोगों को अतिरंजित कल्पना थी। महाराष्ट्र में, मध्यप्रदेश में संघ के कार्य को देखकर लोगों को लगता था कि सारे हिन्दुस्थान में भी ऐसा ही होगा। पर ऐसा नहीं था। गोंदिया से बेलगाँव तक का क्षेत्र जो था वहाँ हमारे कार्य का प्रभाव था, लेकिन बाकी जगहों पर नहीं। यह देश का मध्यभाग बनता है और इस मध्यभाग में हमने कुछ हिस्सा स्वतन्त्र भी करा लिया होता तो चारों तरफ से उस पर आक्रमण करने के लिए स्थान था और इसलिए इस आन्दोलन में जब सारे अस्त्रों-शस्त्रों के साथ अंग्रेजी सेना आती तो, सामान्य जनता उसका सामना नहीं कर सकती थी। इससे जनता का मनोबल और अधिक टूटता। दूसरा कोई एक ऐसा भाग एक कोने में होता कि जहाँ की पिछाड़ी को हम सुरक्षित रख सकते होते, तो भी कुछ किया जा सकता था। पर वैसा भी नहीं था। और इसलिए हमने यह तय किया कि इस समय जिसको भाग लेना

**हमारी शक्ति के बारे में लोगों को अतिरंजित कल्पना थी। महाराष्ट्र में, मध्यप्रदेश में संघ के कार्य को देखकर लोगों को लगता था कि सारे हिन्दुस्थान में भी ऐसा ही होगा। पर ऐसा नहीं था। गोंदिया से बेलगाँव तक का क्षेत्र जो था वहाँ हमारे कार्य का प्रभाव था, लेकिन बाकी जगहों पर नहीं। यह देश का मध्यभाग बनता है ...............।**

हो, वह व्यक्तिगत रूप से भाग ले सकता है, लेकिन संघ के नाते हमको भाग नहीं लेना है। और इसलिए उन्होंने कहा, जैसे डाक्टर जी ने १६३० में कहा था कि तुम संघ का कार्य करते रहो, उसी प्रकार संघ का कार्य करना चाहिए लेकिन जिन लोगों को लगता है कि जाना है उन्हें व्यक्तिगत रूप से जाने की छूट है। और अपने लोग गये भी। चिमूर आष्टी में अपने ही स्वयंसेवकों ने झण्डा थाने के ऊपर फहराया और सब प्रकार का आन्दोलन किया।

इतना ही नहीं, इस आन्दोलन में जो लोग लगे थे ऐसे अनेक नेताओं की रक्षा का दायित्व अपने स्वयंसेवकों ने लिया। इनमें क्रांतिवीर नाना पाटिल, किशनवीर, अरुणा आसिफ अली, अच्युतराव पटवर्धन, ऐसे अनेक लोग थे। ये कोई संघ के प्रेमी नहीं थे। संघ को गालियाँ देने वाले ही थे। लेकिन फिर भी अपने स्वयंसेवकों ने उन सबकी सुरक्षा की और उनको छिपाकर रखने का प्रयत्न किया ताकि भूमिगत आन्दोलन ठीक प्रकार से चल सके। इस आन्दोलन को किसी प्रकार की क्षति पहुँचे या इस आन्दोलन के बारे में लोगों के मन में कोई हीन भाव जाग्रत हो, इसका तेजोभंग हो, ऐसा कोई कार्य अपने स्वयंसेवकों ने नहीं किया। आन्दोलन जिस ढंग से चल रहा था, विफल होना था, हो गया। किन्तु संघ के स्वयंसेवक अपनी शक्ति बढ़ाने का प्रयत्न करते रहे। उस समय जैसी परिस्थिति अपने देश में निर्मित हुई और जिस प्रकार से मुस्लिम लीग ने पाकिस्तान का नारा लगाकर देशभर में अपनी धाक जमाने का प्रयत्न किया, अंग्रेजों के परोक्ष समर्थन से जगह-जगह पर दंगे करवाये, उसके कारण घबराकर हिन्दु समाज बहुत बड़ी मात्रा में संघ में आया और विशेषकर १६४६ का सीधी कार्यवाही का जो नारा मुस्लिम लीग ने लगाया, उसके कारण तो संघ की शाखाओं के अंदर बहुत अधिक वृद्धि हुई। लेकिन वह वृद्धि क्षणिक थी, तात्कालिक थी, टिकने वाली नहीं थी। उस समय आतंक का वातावरण था इसलिए लोग आ रहे थे, फिर भी संघकार्य बढ़ा।

**संघ की बढ़ती शक्ति को कुछ लोग पचा नहीं पा रहे थे। जो विभाजन के दोषी थे, जिन्होंने इस विभाजन को स्वीकार किया था, उनको ऐसा लगता था कि हमने इतनी बड़ी गलती की हुई है, इसलिए निश्चित रूप से हमको कटघरे में खड़ा किया जाएगा। जो लोग हमको कटघरे में खड़ा कर सकते हैं, उनको ही कटघरे में खड़ा कर दो। .............**

**भारत विभाजन के समय संघ की भूमिका :**

लेकिन अपने देश का दुःखद विभाजन भी हुआ और इस विभाजन के समय जिसको आज हम पाकिस्तान या बांग्लादेश कहते हैं, वहाँ पर रहने वाले लोगों को सुरक्षित हम हिन्दुस्थान ला सके, इसका कारण ही यह था कि हमारी शक्ति उन सारे क्षेत्रों में उस समय पर बढ़ी हुई थी। उस समय प.पू. श्रीगुरुजी कहा करते थे कि भई! अहिंसा का मामला चलेगा नहीं। अहिंसा की दृष्टि से देखा जाये तो बकरा जो है वह अप्रतिकार की जीवन्त मूर्ति होता है। पर इसके कारण वह कटने से बचता नहीं है। हमको बलि का बकरा नहीं बनना है, आत्मरक्षा का हमको विश्वास है, हमारा अधिकार है। अगर सरकार हमारी रक्षा नहीं करती तो आत्मरक्षा के लिए हम अवश्य प्रतिकार कर सकते हैं। इसलिए उन्होंने कहा कि डटकर रहो। उस समय स्वयंसेवकों ने जो अपना तेज दिखाया है, बलिदान किया है, जिस प्रकार की सूझबूझ दिखायी, साहस दिखाया, माताओं ने जिस प्रकार के अनेक जौहर किये हैं, उसका सारा इतिहास **'ज्योति जला निज प्राण की'** नाम की जो पुस्तक इस समय प्रकाशित हुई है उसके अंदर बड़े ही अच्छे शब्दों में वर्णन किया गया है। उसमें हमारे स्वयंसेवकों के त्याग, पौरुष, पराक्रम, इन सबका एक बड़ा ही जीवन्त चित्र अपने एक कार्यकर्ता ने प्रस्तुत किया है।

देश का विभाजन हुआ, लेकिन देश के विभाजन के बाद संघ की बढ़ती शक्ति को कुछ लोग पचा नहीं पा रहे थे। जो विभाजन के दोषी थे, जिन्होंने इस विभाजन को स्वीकार किया था, उनको ऐसा लगता था कि हमने इतनी बड़ी गलती की हुई है, इसलिए निश्चित रूप से हमको कटघरे में खड़ा किया जाएगा। जो लोग हमको कटघरे में खड़ा कर सकते हैं, उनको ही कटघरे में खड़ा कर दो। तभी देश के दुर्भाग्य से और उनके सौभाग्य से महात्मा गांधी की हत्या हो गयी और महात्मा गांधी की हत्या का झूठा आरोप लगाकर संघ पर प्रतिबंध लगा दिया गया। वह आरोप आज तक लगाया जा रहा है। अभी-अभी दिल्ली में कांग्रेस की रैली हुई, गुजरात में वहाँ की सरकार ने सरकारी कर्मचारियों को जिन क्षेत्रों में नहीं जाना चाहिए उस हेतु राजनीतिक दलों के साथ अन्य संगठनों की जो एक बड़ी सूची दी थी उसमें से संघ का नाम भी हटा दिया था। उसी को आधार बनाकर उन्होंने एक बड़ी भारी रैली करने का प्रयत्न किया, उस संबंध में जो पोस्टर छापे, उन पोस्टरों में भी उन्होंने संघ के स्वयंसेवक को महात्मा गांधी को गोली मारते हुए दिखाया।

**गांधी हत्या की त्रासदी :**

महात्मा गांधी की हत्या ३० जनवरी को हुई और उसके कुछ ही दिन के पश्चात् पूजनीय श्रीगुरुजी नागपुर आये जहाँ उनको गिरफ्तार कर लिया गया। गिरफ्तार करने के बाद जब उनको जेल ले गये तो उनसे पूछताछ करने के लिए जो डी.आई.जी. आया हीरालाल नाम का, अच्छा मोटा-ताजा आदमी था। उसको लगता था कि गुरुजी को हत्या और षड्यंत्र की धाराओं में पकड़ा गया है, इसलिए निश्चित रूप से गुरुजी बड़े घबराये हुए होंगे। इसलिए उन पर अपना रौब जमाने के लिए वह कुर्सी पर बैठा, जूते समेत अपने दोनों पैर टेबल पर रखे और सिगरेट पीने लगा और कहा, "जेलर साहब! गुरुजी को हाजिर करो।" गुरुजी आये। देखने के साथ ही उसने व्यंग्य कसा — "ओहो! आप ही गुरु गोलवलकर हैं! आप सरसंघचालक हैं! आप तो बड़े दुबले-पतले हैं।" गुरुजी ने छूटते ही जवाब दिया कि "डॉ० हेडगेवार ने सरसंघचालक का कोई आकार-प्रकार निश्चित नहीं किया था अन्यथा किसी बोदे (भैंसे) को या तुमको सरसंघचालक की गद्दी पर बैठा देते।" ऐसा टका सा जबाव दिया तो वह सन्न रह गया। दोनों पैर नीचे रखे। कहने लगा, "अरे जेलर साहब! कुर्सी दो, कुर्सी दो।" बाद में पूछा — "गुरुजी, गांधी जी की हत्या हो गयी, उस संबंध में आप क्या जानते हैं। तो गुरुजी बोले? "तुमको क्यों बताऊँ? जो बताना होगा वह मैं अदालत में बताऊंगा और ध्यान रखना, अदालत में जवाहरलाल नेहरू और सरदार वल्लभभाई पटेल को भी मैं खींचूंगा।" जब यह समाचार दिल्ली पहुँचा तो उनकी तरफ से सारी धाराएँ-वाराएँ हटाकर केवल निवारक नजरबन्दी कानून के अन्तर्गत उनको ले लिया गया। २७ फरवरी को जब नेहरूजी ने सरदार पटेल से पूछा कि तुम क्या कर रहे हो? अभी तक संघ पर कोई आरोप ही सिद्ध नहीं हो रहा है? तो उन्होंने कहा कि "हम सब प्रकार का

**उन्होंने कहा कि स्वतंत्रता पहली सीढ़ी होती है। हाथ-पैर में बेड़ियाँ बँधी हों तो मनुष्य भाग नहीं सकता। हम स्वतंत्र हुए हैं तो आगे हमको चलना है। इसलिए उसके लिए हमको संगठित होकर रहना पड़ेगा। राष्ट्रभक्ति; देशभक्ति और संगठन का भाव अगर नहीं रहा तो न हम अपनी स्वतंत्रता की रक्षा कर पायेंगे और न हम अपने देश की प्रगति ठीक प्रकार से कर पायेंगे। उस समय उन्होंने कार्य को एक नयी दिशा दी।**

प्रयत्न कर रहे हैं, सारी जाँच ठीक चल रही है लेकिन कहीं भी हमको संघ का हाथ इसमें दिखाई नहीं देता।" उसी समय सरकार को तभी मालूम हो गया था कि संघ का कोई हाथ नहीं है। फिर भी जिस हिन्दु महासभा के व्यक्ति ने गांधीजी को मारा था, उस हिन्दु महासभा पर कोई प्रतिबन्ध नहीं लगा क्योंकि उनकी उस समय कोई विशेष शक्ति नहीं थी। संघ के ऊपर प्रतिबंध लगा। सत्तर हजार लोग सत्याग्रह करके उस प्रतिबंध को हटाने के लिए जेल गये, जिसको लोग एक बच्चों का खेल समझ रहे थे। सरकार को बाध्य होकर बिना शर्त संघ के ऊपर से प्रतिबंध हटाना पड़ा और संघ-जीवन का एक नया अध्याय प्रारम्भ हुआ।

**द्वितीय पर्व :**

**संघ कार्य के विविध आयाम**

प.पू. गुरुजी ने निरन्तर भ्रमण करके लोगों का आह्वान किया। उस समय लोग प्रश्न पूछने लगे थे, क्या जरूरत है संघ की अब? देश तो स्वतंत्र हो गया? तब सारे देश में भ्रमण कर उन्होंने कहा कि स्वतंत्रता पहली सीढ़ी होती है। हाथ-पैर में बेड़ियाँ बँधी हों तो मनुष्य भाग नहीं सकता। हम स्वतंत्र हुए हैं तो आगे हमको चलना है। इसलिए उसके लिए हमको संगठित होकर रहना पड़ेगा। राष्ट्रभक्ति, देशभक्ति और संगठन का भाव अगर नहीं रहा तो न हम अपनी स्वतंत्रता की रक्षा कर पायेंगे और न हम अपने देश की प्रगति ठीक प्रकार से कर पायेंगे। उस समय उन्होंने कार्य को एक नयी दिशा दी। धीरे-धीरे कार्य बढ़कर उनके जीवनकाल में ही संघ का कार्य देश के जिलों-जिलों तक पहुँच गया। लेकिन इस दूसरे पर्व में संघ के कार्य के विस्तार के साथ-साथ समाज-जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में हमारे कार्यकर्ता राष्ट्र के सर्वांगीण विकास के लक्ष्य को लेकर चले। १९४९ में 'अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद्' की स्थापना हुई। आज वह हिन्दुस्थान का सबसे बड़ा विद्यार्थी संगठन बनकर खड़ा है। १९५२ में 'वनवासी कल्याण आश्रम' की स्थापना हुई। उस समय उसका नाम 'वनवासी कल्याण आश्रम' नहीं, केवल 'कल्याण आश्रम' नाम था। आज हिन्दुस्थान में वनवासी क्षेत्र में काम करने वाला, जिसकी पहुँच ३५ हजार गाँवों तक है, वह सबसे बड़ा गैर सरकारी संगठन हैं। १९५२ में ही गोरखपुर में शिशु मंदिर आरम्भ हुआ। आज हिन्दुस्थान भर में सरकार के पश्चात् सबसे अधिक १६ हजार विद्यालय चलाने वाली 'विद्या भारती' गैर सरकारी संगठन है। १९५५ में 'भारतीय मजदूर संघ' की

स्थापना हुई। सबसे देर से, लेकिन हिन्दुस्थान का चोटी का श्रमिक-संगठन बनकर आज वह खड़ा हुआ है। १६५२ में ही 'जनसंघ' की स्थापना हुई। आज राजनीतिक क्षेत्र में उसका जो परवर्ती रूप है, जिसको 'भारतीय जनता पार्टी' कहते हैं, जिसमें हमारे अनेक कार्यकर्ता हैं, वह हिन्दुस्थान का सबसे बड़ा राजनीतिक दल तो है लेकिन इतना बड़ा नहीं कि अपने बलबूते पर कुछ कर सके। फिर भी आज सबसे बड़ा दल बनकर खड़ा है। 'विश्व हिन्दु परिषद्' की १६६४ में स्थापना हुई। दुनियाभर में सभी मत, संप्रदायों को समान मंच प्रदान करने वाला, विश्वभर में अपनी शाखाओं, प्रशाखाओं का विस्तार करने वाला, सबसे बड़ा हिन्दुओं का संगठन बनकर आज खड़ा हुआ है। 'भारतीय किसान संघ' १६७६ में शुरू हुआ और अभी-अभी उनका अधिवेशन मेरठ में हुआ जिसमें साढ़े नौ हजार प्रतिनिधि देशभर से वहाँ पर एकत्रित हुए। इस बीच में अनेक किसान संगठन खड़े हुए और ऐसा लगा कि ये सारे देशभर में छा जायेंगे लेकिन हम देखते हैं कि आज उन संगठनों का कहीं भी नाम नहीं है। यह जो संगठन हिन्दु विचार को लेकर चला, संघ के स्वयंसेवकों के संगठन-कौशल्य के बलबूते पर बढ़ा। आज उसने एक अखिल भारतीय स्वरूप प्राप्त करके सम्पूर्ण किसानों के अन्दर एक नयी आशा जगाने का कार्य किया है।

**पू. श्रीगुरुजी ने कहा कि यह सारी चीज केवल शाखा के बलबूते पर ही हम प्राप्त कर सकते हैं और इसलिए सम्पूर्ण शक्ति लगाकर अगर शाखा ठीक चलेगी तो बाकी सब चीजों को बल मिलेगा, बाकी सब चीजें भी ठीक चलेंगी। इसलिए हमारी शाखा, दैनन्दिन शाखा, उस पर होने वाले कार्यक्रम, उनके द्वारा होने वाले संस्कार, स्वयंसेवकों का गुण-संवर्धन इत्यादि सब बातों की तरफ हमने ध्यान दिया तो हर क्षेत्र में हमारी विजय है और इस पर हम निरन्तर ध्यान देते रहे तो चारों ओर हमारी विजय ही विजय रहेगी।**

समाज-जीवन के अनेक क्षेत्रों में अनेक प्रकार के कार्य आज खड़े हुए हैं। तो ऐसे सारे कामों का बीजारोपण, यह जो हमारा द्वितीय पर्व था, इस द्वितीय पर्व में हुआ और प.पू. श्री गुरुजी ने संघ कार्य का विस्तार तो किया ही लेकिन सब क्षेत्रों में पुनर्रचना के नये प्रयत्न भी प्रारम्भ कर दिये। १६४६ में जिन लोगों ने पूछा था कि आप सर्वांगीण विकास की बात करते हैं तो आपका Blue Print (कार्यसूची और कार्यक्रम) क्या है? तो उन्होंने कहा कि Blue Print

योग्य समय पर आयेगा। पूछा गया कि जब कोई कहता है कि सर्वांगीण विकास करेंगे तो उसका Blue Print भी तैयार करता है। श्रीगुरुजी ने कहा कि उस समय वह यह भी तय करता है कि किस समय उसे घोषित करना चाहिए। आज हम कह सकते हैं कि हर क्षेत्र के अन्दर लोगों ने एक रास्ता बनाया है। हिन्दु चिन्तन के आधार पर उस-उस क्षेत्र की प्रगति किस दिशा में और किस प्रकार से हो सकती है इसका खाका खड़ा किया है। लेकिन अपना जो अंतिम भाषण उन्होंने दिया उसमें पू. श्रीगुरुजी ने कहा कि यह सारी चीज केवल शाखा के बलबूते पर ही हम प्राप्त कर सकते हैं और इसलिए सम्पूर्ण शक्ति लगाकर अगर शाखा ठीक चलेगी तो बाकी सब चीजों को बल मिलेगा, बाकी सब चीजें भी ठीक चलेंगी। इसलिए हमारी शाखा, दैनन्दिन शाखा, उस पर होने वाले कार्यक्रम, उनके द्वारा होने वाले संस्कार, स्वयंसेवकों का गुण-संवर्धन इत्यादि सब बातों की तरफ हमने ध्यान दिया तो हर क्षेत्र में हमारी विजय है और इस पर हम निरन्तर ध्यान देते रहे तो चारों ओर हमारी विजय ही विजय रहेगी।

## तृतीय पर्व :

## संघ-शक्ति का प्रकटीकरण

लेकिन उस समय एक संकेत उन्होंने और दिया था। उन्होंने यह कहा था कि इस प्रकार का एक वातावरण निर्मित हो रहा है जहाँ पर कुछ लोग सत्ता पर पूर्ण शक्ति के साथ बैठ जायेंगे और बाकी सारी जनता उनकी गुलाम हो जायेगी। यह संकेत था, जो साकार हुआ १९७५ में, जब अपने देश में आपातकाल लगा और उस समय संघ पर भी पूरा प्रतिबंध लगा दिया गया। अनेक राजनीतिक दलों के लोगों को भी अन्दर डाल दिया गया। उस समय प.पू. बालासाहबजी ने अपने कुशल नेतृत्व से इस विपत्ति के काल में देश की नैया को ढोया। संघ भूमिगत आन्दोलन का सबसे बड़ा आधार बन गया। यहाँ तक कि संघ पर प्रतिबन्ध लगाने के चार महीने के पश्चात् प्रधानमंत्री इन्दिरा गांधी ने कहा कि हमने संघ पर प्रतिबन्ध लगाकर बड़ी गलती की, किन्तु अब प्रतिबन्ध हटाने की दूसरी गलती मैं नहीं करूंगी। उनको मालूम था कि बाकी राजनीतिक दलों का प्रभाव एक-एक दो-दो प्रान्तों तक सीमित था पर संघ का आधार अखिल भारतीय था, इसलिए उन्हें लगा कि विरोध भी अखिल भारतीय होगा और सब प्रकार के आतंक के पश्चात् भी अंत में उसके प्रतिरोध के लिए सत्याग्रह हुआ। लोगों को विश्वास ही

नहीं होता था कि इतनी कठिन परिस्थिति में जब वकील, दलील, अपील, ये सब बंद थे, सर्वोच्च न्यायालय में घोषणा की जा चुकी थी कि इस आपातकाल के अंदर लोगों की जान भी अगर ले ली जाये तो भी आप अदालत में नहीं जा सकते, संघ के स्वयंसेवकों के बलबूते पर इतना बड़ा सत्याग्रह का आन्दोलन हुआ। **'आपातकालीन संघर्ष गाथा'** आप पढ़ेंगे तो सब चीजें आपको मिलेंगी कि किस प्रकार वहाँ पर भी अपने स्वयंसेवकों ने अपनी सूझबूझ, अपने परिश्रम, अपनी प्रत्युत्पन्नमति, अपने त्याग और बलिदान से उस विपत्ति में भी देश को फिर से स्वतंत्रता प्राप्त करायी। उसके बाद इस प्रकार तीसरा पर्व में संघ के विभिन्न क्षेत्रों के संगठन ज्यादा बल प्राप्त करना शुरू कर देते हैं।

## चौथ पर्व :

## रामजन्मभूमि आन्दोलन

जब १९८९ आता है तब एक चौथा पर्व प्रारम्भ होता है, जब सम्पूर्ण हिन्दु समाज के अन्दर एक जागरण होता है, और उसका केन्द्र-बिन्दु बनता है रामजन्मभूमि का आन्दोलन। उस रामजन्मभूमि के आन्दोलन में आगे चलकर बाकी सारे संगठन जुड़े, राजनीतिक दल भी उसके अन्दर जुड़ गया तो एक अभूतपूर्व आन्दोलन सारे देशभर में खड़ा हो गया और जितने अहिंसक ढंग से सम्पूर्ण समाज की चेतना को उसने जगाया वह वास्तव में आन्दोलनों के इतिहास में एक अभूतपूर्व घटना है। उसी का परिणाम यह हुआ कि १९८९ में १० नवम्बर को शिलान्यास हुआ। जिस समय १० नवम्बर को यहाँ पर शिलान्यास हो रहा था उसी समय छः हजार मील दूर बर्लिन के अंदर वहाँ की दीवार टूट रही थी। उस दीवार का टूटना कम्युनिज्म के पतन का प्रारम्भ था और यहाँ पर शिलान्यास किया जाना भारतीय राष्ट्र-मंदिर के निर्माण का शिलान्यास था। एक ही समय दोनों घटनाएं घटती हैं और तीन साल के पश्चात् जब वह गुलामी का ढाँचा ढहा दिया गया तो सारे देश में जहाँ कहीं भी हिन्दु बैठा है उसका सीना चार इंच फूल गया। उसको लगा कि हजार वर्षों के

**10 नवम्बर को यहाँ पर शिलान्यास हो रहा था उसी समय छः हजार मील दूर बर्लिन के अंदर वहाँ की दीवार टूट रही थी। उस दीवार का टूटना कम्युनिज्म के पतन का प्रारम्भ था और यहाँ पर शिलान्यास किया जाना भारतीय राष्ट्र-मंदिर के निर्माण का शिलान्यास था।**

पारतंत्र्य के पश्चात् कहीं मैंने भी विजय प्राप्त की है। अमेरिका में बिग हेम्पटन नाम का स्थान है, १९९३ में जब जाने का मौका मिला तो उस अवसर पर वहाँ जो बहुत से भारतीय डाक्टर हैं उनके साथ कुछ वार्तालाप हुआ। बाद में एक डाक्टर के घर में गये जो वास्तव में कम्युनिस्ट थे। ज्योति बसु के बड़े निकटतम मित्र थे। लेकिन उन्होंने कहा कि ६ दिसम्बर १९९२ तक नम्बूदिरीपाद हमारे हीरो थे, उसके बाद हमने उनको घूरे पर फेंक दिया। अब मैं विश्व हिन्दु परिषद् के लिए काम करूंगा और उन्होंने विश्व हिन्दु परिषद् का वाशिंगटन में जो अधिवेशन हो रहा था उसके लिए दस हजार डालर स्वयं इकट्ठे किये। तो दुनिया भर में जहाँ-जहाँ हिन्दु था उसको लगा उसने कुछ प्राप्त किया है! १९२५ में जहाँ लोग कहते थे कि हमको गधा कह लो, हिन्दु मत कहो, वहाँ एकदम चारों तरफ से कहा जाने लगा — **'गर्व से कहो हम हिन्दु हैं'**। यह हमारा चौथा पर्व था! और तब से लेकर आज तक यह हिन्दुत्व का भाव बढ़ रहा है, उभर रहा है। इसी के कारण जितने विरोधी हैं वे बड़े चिन्तित हैं। और इसीलिए हिन्दुत्व के खिलाफ बड़ा जबरदस्त आक्रोश भी खड़ा किया जा रहा है। अगर यह शक्ति नहीं होती, यह बल नहीं होता तो बाकी लोग कोई चिन्ता नहीं करते। लेकिन चूँकि यह बढ़ रहा है इसलिए वे लोग संघ के ऊपर आक्रमण कर रहे हैं, क्योंकि वे स्वयं राजनीतिक क्षेत्र के अंदर आज शक्तिहीन, श्रीहीन होते चले जा रहे हैं। उनको और कोई चीज मिलती नहीं है सिवाय संघ को गाली देने के, उन्हें और कुछ करना नहीं है। लेकिन गाली देते हुए भी कई बार उनको लगता है कि सारा हिन्दु समाज हमारे खिलाफ अगर हो गया तो क्या होगा? इस नाते से भी अपना कार्य बढ़ाना आवश्यक है।

## पाँचवाँ पर्व :

## शाश्वत संस्कृति का जयघोष

लेकिन हम एक ऐसी स्थिति में आ गये हैं जब हम एक नये पर्व में प्रवेश कर रहे हैं। यह पाँचवाँ पर्व है। प.पू. श्रीगुरुजी ने १९६२-६३ में अपने बौद्धिक वर्ग में टैनिसन की एक कविता का उल्लेख करते हुए कहा था —

"Act first, this earth a stage, so gloomed with woe, that you all but sicken at the shifling scene. Yet be patient, our playwright may show in some fifth act, what this wild drama means."

यह जो पाँचवाँ दृश्य है, इसके अन्दर नाटक लिखने वाला शायद इस बात को स्पष्ट करेगा कि इतनी सारी उठापटक का आखिर अर्थ क्या है। हमारे यहाँ सब लोग उस विजय की दिशा में बढ़ रहे हैं। लेकिन विजय की दिशा में जब बढ़ते हैं तो वहाँ पर एक खतरा भी होता है। खतरा यह होता है कि पराजय को संभालना ज्यादा सरल है, विजय को संभालना कठिन है। जब सफलता चरण चूमने लगती है तो आदमी का दिमाग भी चढ़ जाता है। चढ़ते हुए दिमाग में वह अनेक गलतियाँ भी कर बैठता है। इसलिए सफलता को अगर पचाना है तो उसके लिए प्रबल शक्ति चाहिए, आत्मविश्वास चाहिए। एक बार किसी आदमी के नाम से १० लाख की लॉटरी निकल आयी। इसका पता उसके मित्र को लगा। वह जानता था कि मेरे जिस मित्र को लाटरी मिली है उसका दिल बड़ा कमजोर है। अगर उसको यह पता लग गया कि १० लाख मिला है तो कहीं खुशी के मारे उसका दिल धड़कना ही न बन्द हो जाय। इसलिए वह एक मनोचिकित्सक के पास गया। उसने अपनी समस्या बतायी तो उन्होंने कहा — अच्छा, उसको ले आओ। डाक्टर ने उससे पूछा कि 'तुमको अगर एक हजार रुपये मिल जायें तो तुम क्या करोगे?' बोला 'एक हजार मिल जायें तो छोटे-मोटे कर्ज चुका दूंगा।' 'तुमको अगर पाँच हजार मिले तो क्या करोगे?' 'पाँच हजार मिले तो एक अच्छी-सी साईकिल खरीद लूंगा, कर्जे चुका दूंगा।' 'तुमको अगर १० हजार रुपये मिले तो क्या करोगे?' 'तो एक मोटर साइकिल खरीद लूंगा।' 'यदि ५० हजार मिले तो क्या करोगे?' 'तो एक मकान खरीद लूंगा।' 'एक लाख मिले तो क्या करोगे?' 'तो थोड़ा धंधा भी शुरू कर दूंगा।' 'पाँच लाख मिले तो क्या करोगे?' 'पाँच लाख मिले तो और एक कोई बड़ा कारखाना शुरू करूंगा।' 'दस लाख मिले तो क्या करोगे?' 'अरे डॉ० साहब, आपने क्या मजाक मचा रखा है। अगर दस लाख मिले तो मैं पाँच लाख आपको दे दूंगा।' डॉ० ने कहा, 'पाँच लाख मुझे!' और उन डाक्टर का हॉर्ट फेल हो गया। तो यह जो सफलता है उस सफलता को पचाने के लिए बड़ी शक्ति चाहिए, सामर्थ्य चाहिए, धीरज चाहिए। आज हमारे संगठन जिस दिशा में बढ़ रहे हैं वहाँ पर अपना सामर्थ्य, अपना संतुलन बनाये रखने की आवश्यकता है और अब तक की सफलता से किसी प्रकार न फूलते हुए हमें आगे बढ़ना है। अब तो हम महाभारत के युद्ध में खड़े हैं। एक ओर हिन्दुत्व-विरोधी शक्तियाँ हैं जो हिन्दुत्व को उभरने नहीं देना चाहतीं। एड़ी-चोटी

का पसीना लगाकर इसको वे नष्ट करना चाहती हैं। दूसरी ओर हिन्दुत्व-समर्थक शक्तियाँ हैं जो अपना सिर उठा रही हैं। आज हिन्दु समाज उभर रहा है। अब इसके उभार को कोई रोक नहीं सकता, कोई इसको दबा नहीं सकता। इसलिए एक नये युग में हम प्रवेश कर रहे हैं जब हिन्दुत्व समाज-जीवन के हर क्षेत्र में अपने आपको अभिव्यक्त करेगा। हिन्दु राष्ट्र का भव्य-दिव्य चित्र खड़ा होगा। सबके सामने यही चुनौती है कि चारों तरफ की जो सफलता मिल रही है उससे किसी प्रकार विचलित न होते हुए हम लोग आगे बढ़ें।

**'वेदी पर बैठा महाकाल,**
**जब नरबलि चढ़ा रहा होगा।**
**बलिदानी अपने ही कर से,**
**निज मस्तक बढ़ा रहा होगा।**
**तब उस बलिदान–प्रतिष्ठा में,**
**पथ भूल न जाना पथिक कहीं।'**

**विजय ही विजय है :**

जब चारों तरफ से जय-जयकार होती है उस समय हम कहीं भटक न जायें, इसका भी बड़ा अंदेशा रहता है। और इसलिए अपने पथ पर दृढ़ रहते हुए, अपने विश्वास पर दृढ़ रहते हुए सारे क्षेत्रों का मूलाधार जो अपना संघ का कार्य है, जिसके कारण इतना अधिक व्याप हमने प्राप्त किया हुआ है, इसको हम पूरी निष्ठा के साथ चलायें, इस बात की अत्यन्त आवश्यकता है और इस पूरे विश्वास के साथ कि विजय हमारी है, क्योंकि हमारे सारे त्रिकालदर्शी महापुरुषों ने इस बात की भविष्यवाणी की है। स्वामी विवेकानन्द ने पिछली शताब्दी में यह कहा था कि "मैं भविष्य नहीं देखता, देखने की मेरी कोई इच्छा भी नहीं है, लेकिन एक बात बड़े स्पष्ट रूप से देख रहा हूँ कि भारतमाता अपने सिंहासन पर पहले से भी अधिक गौरवान्वित होकर बैठी हुई है। आओ! उसकी जय-जयकार, सारी दुनिया के अन्दर में गुँजा दें।" ऋषि अरविन्द ने कहा था १५ अगस्त १६४७ को, "जो देश का विभाजन हुआ है वह गलत हुआ है। इसके कारण भारत कमजोर रहेगा। चाहे जिस पद्धति से हो, विभाजन समाप्त होना ही चाहिए। और वह होगा, लेकिन अभी कुछ दिनों तक यह देश गलत रास्ते पर चलेगा।"

और वह चला भी। इसके आगे उन्होंने कहा, "आने वाली शताब्दी में वह सम्पूर्ण विश्व का नेतृत्व करेगा।" महात्मा गांधी ने भी यही बात कही "हिन्दुत्व सत्य की निरन्तर खोज का दूसरा नाम है। अगर यह प्रवाह आजकल शिथिल हो गया है, परिवर्तन के प्रति असंवेदनशील हो गया है, तो उसका कारण यह है कि हम थक गये हैं। जिस दिन यह थकावट दूर होगी उस दिन हिन्दुत्व अपनी सम्पूर्ण शक्ति के साथ दुनिया में इतने जोरों से विस्फोट करेगा जैसा भूतकाल में कभी नहीं हुआ।" सबकी भविष्यवाणियाँ अवश्य सत्य सिद्ध होंगी। इसलिए हम अपने ऊपर प्रबल विश्वास रखें और विश्वास रखकर अपने काम में आगे बढ़ें, इसी की आज अत्यन्त आवश्यकता है —

**शुद्ध हृदय की प्याली में,**
**विश्वास दीप निष्कम्प जलाकर।**
**कोटि–कोटि पग बढ़े जा रहे,**
**तिल–तिल जीवन गला–गला कर।**
**जब तक ध्येय न पूरा होगा,**
**तब तक पग की गति न रुकेगी,**
**आज कहे चाहे जो दुनिया,**
**कल को झुके बिना न रहेगी।।**

◎◎◎

**पू० सरसंघचालक जी**, *सभी ज्येष्ठ श्रेष्ठ अधिकारी वर्ग तथा आत्मीय स्वयंसेवक बन्धुगण —*

जो भी दायित्व दिया जायेगा उसको स्वीकार कर निभाना यही संघ की नीति है। सरकार्यवाह के दायित्व का इतना बड़ा भार वहन करने के लिये आपके सामने मुझ से अधिक गुणवान, ज्ञानवान, अनुभवी अनेक व्यक्ति होने के बावजूद, आपने मुझ पर यह भार डाला है, तो मैं आपके निर्णय को शिरोधार्य मानकर इसे स्वीकार करता हूँ। मैं भी जानता हूँ, और आप भी सब जानते हैं कि आयु तथा अनुभव के मामले में मैं बहुत छोटा हूँ। परन्तु संघ में कोई एक व्यक्ति कार्य नहीं करता। यह सारे पद दायित्व के पद हैं, एक व्यवस्था है। कार्य तो सभी स्वयंसेवक मिलकर करते हैं। कोई अकेला व्यक्ति कार्य नहीं करता। संपूर्ण संघ और संघ का प्रत्येक स्वयंसेवक कार्य करता है। सबने मिलकर मुझे आगे रखने का तय किया है, तो मैं आगे रहूँगा।

मुझे तो इतना ही अनुभव हो रहा है कि कोई समूह जब किसी पहाड़ की चढ़ाई चढ़ता है, तब समूह में किसी छोटे बच्चे के कारण समूह की गति कम न हो इसलिए कोई बड़ा-बूढ़ा जैसे उस बच्चे को कंधे पर उठा लेता है, जिससे समूह की गति भी कम नहीं होती व बच्चे को भी उस परिवेश में अधिक ज्ञान प्राप्त करने का अवसर मिलता है। उसी प्रेम व विश्वास के साथ आपने मुझे इस दायित्व पर आगे रखा है।

अपने बारे में मुझे कोई गलतफहमी नहीं है। मेरे नाम के प्रस्ताव तथा अनुमोदन में बहुत सारी बातें जो कही गयी वे क्यों कही गयी, यह मैं जानता हूँ। मैं जानवरों का डाक्टर हूँ। जानवर को इंजेक्शन देते समय सुई घोंपना पड़ता है, उसके पहले उस जगह को हाथ से सहलाकर उस पशु का ध्यान बटाने की पद्धति मेरे शास्त्र में भी बतायी है। इसलिए मैं भी और आप भी मेरी कमियों को जानते हैं। आप सबके पुण्यप्रताप से अपना कार्य अब तक जैसे दिन-प्रतिदिन बढ़ा, वैसे ही इसके बाद भी बढ़ता जायेगा।

मैं आपको यह विश्वासपूर्वक आश्वासन देता हूँ। जो दायित्व आपने मुझे दिया है, उसके निर्वाह में कोई भी कसर नहीं रखूँगा। ईश्वर इसमें सहाय्य रहे यह प्रार्थना है। कल प्रतिनिधि सभा के समाप्ति तक का कार्य मा० शेषाद्रि जी ही संचालित करें ऐसी विनती करते हुए मैं अपना कथन समाप्त करता हूँ।

**— मोहनराव मधुकर भागवत,**
**सरकार्यवाह, रा. स्व. संघ**

{अ.भा.प्रतिनिधि सभा, नागपुर (मार्च-२०००) की बैठक में सरकार्यवाह चुने जाने के उपरान्त प्रतिनिधियों के समक्ष दिया गया प्रथम उद्‌बोधन}

डॉक्टर हेडगेवारजी
ने कहा कि राष्ट्र कोई राजनीतिक
अवधारणा नहीं है। किसी एक विशिष्ट
भूभाग में लोग रहते हैं, इस लिए राष्ट्र नहीं
बनता। उसके लिए तो उस भूभाग के अंदर
सदियों से रहते हुए उसके साथ एक
रागात्मक, भावात्मक
संबंध स्थापित होना पड़ता है।
यह भूमि मेरी माँ है, मैं इसका पुत्र हूँ और
पुत्र होने के नाते हम सब एक हैं, हमारे
पूर्वज एक हैं, हमारी संस्कृति एक है, तब
जाकर राष्ट्र का निर्माण होता है।
और यह तो सनातन पुरातन राष्ट्र है।
वेदकाल में इसने घोषणा की है –
'माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः'।
तो यह हिन्दु राष्ट्र है।
प.पू. डॉ० हेडगेवार